5:31 PM 0.0KB/s 4G 3G 27
23 bljain aksham...

अक्षमताग्रस्त बच्चों के लिए समेकित शिक्षा

प्रो. बी.एल. जैन
विभागाध्यक्ष
जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय
लाड़नूँ, राजस्थान

अशोक कुमार लखेरा
शोधार्थी
जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय
लाड़नूँ, राजस्थान

प्रस्तावना –

सामान्य रूप से जो बच्चे औसत शारीरिक एवं मानसिक स्तर IQ 90–110 वाले होते हैं, उन्हें हम सामान्य बच्चे के रूप में जानते हैं। विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे सामान्य बच्चों से किस प्रकार विशिष्ट होते हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि सामान्य बच्चे सामान्य शारीरिक एवं मानसिक श्रम वाले कार्यों को करने में किसी बाधा का अनुभव नहीं करते हैं। कक्षा में अधिकांश बच्चों की भाँति वे शैक्षिक उपलब्धि में भी औसत होते हैं। इनके सीखने की गति भी औसत होती है। इसके विपरीत विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे इस प्रकार के कार्यों को करने में अपने को असहज एवं असमर्थ पाते हैं।

विशिष्टता के क्षत्रे सार्वभौमिक हैं। महान कवि सूरदास जन्मान्ध थे। प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्सटीन का भाषा विकास काफी देर से हुआ। अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट स्वयं पोलियोग्रस्त थे। यह विशिष्टता, वंशानुगत, कभी–कभी वातावरणजन्य तथा कभी–कभी दोनों का संयाजेन होती है। यह सभी उदाहरण सिद्ध करते हैं कि विभिन्न नियोग्यताओं की पूर्ति सम्भव है तथा कोई भी अक्षम बच्चे को उचित शिक्षण एवं प्रशिक्षण के द्वारा सामान्य बच्चों की तरह स्वयं के लिए तथा राष्ट्र एवं समाज के लिए उपयोगी बनाया जा सकता है। आज प्रायः विश्व के सभी देशों में विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति दृष्टिकाणे में आमूल–चूल परिवर्तन हुआ है। विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के सम्बन्ध में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षाशास्त्रियों नें अपने–अपने ढंग से व्याख्या की है, यथा–

1. **हीबर्ड (1996) के अनुसार**– "विशिष्ट बच्चों की श्रेणी में वे बच्चे आते हैं जिन्हें सीखने में कठिनाई का अनुभव होता है या जिनमें मानसिक या शैक्षिक निष्पादन या सृजन अत्यन्त उच्चकोटि का होता है या जिनको व्यावहारिक, सांवेगिक एवं सामाजिक समस्याएँ घेर लेती हैं या वे विभिन्न शारीरिक अपंगताओं या निर्बलताओं से पीड़ित रहते हैं, जिनके कारण ही उनके लिए अलग से विशिष्ट शिक्षा की व्यवस्था करनी पड़ती है।"
2. **क्रो एण्ड क्रो के अनुसार**, "विशिष्ट प्रकार या विशिष्ट पद किसी गुण या उन गुणों से युक्त व्यक्ति पर लागू होता है जिसके कारण वह व्यक्ति, साथियों का ध्यान अपनी ओर विशिष्ट रूप से आकर्षित करता है तथा इससे उसके व्यवहार की अनुक्रिया भी प्रभावित होती है।"
3. **क्रिक (1962) के अनुसार**, "विशिष्ट बच्चे मानसिक, शारीरिक तथा सामाजिक गुणों में सामान्य बच्चों से भिन्न होते हैं। उनका भिन्नता कुछ ऐसी सीमा तक होती है कि उसे स्कूल के सामान्य कार्यों में विशिष्ट शिक्षा सेवाओं में परिवर्तन की आवश्यकता होती है। ऐसे बच्चों के लिए कुछ अतिरिक्त अनुदेशन भी चाहिए, ऐसी दशा में उनका सामान्य बच्चों की अपेक्षा अधिक विकास हो सकता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओ के आधार पर हम कह सकते हैं कि, "विशिष्ट बच्चे वह बच्चे है जो कि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, शैक्षिक, सांवेगिक एवं व्यावहारिक विशेषताओं के कारण किसी सामान्य या औसत बच्चे से उस सीमा तक स्पष्ट रूप से विचलित या अलग होता है जहाँ कि उसे अपनी याग्ेयताओं, क्षमताओं एवं शक्तियों को समुचित रूप से विकसित करने के लिए परम्परागत शिक्षण–विधियों में परिमार्जन या विशिष्ट प्रकार के कायर्क्रमों की आवश्यकता होती है, उन्हें विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे कहा जाता है। इस श्रेणी में शारीरिक रूप से अक्षम, प्रतिभाशाली, सृजनात्मक, मन्दबुद्धि, शैक्षिक रूप से श्रेष्ठ एवं पिछड़े बाल–अपराधी, असमायोजित, समस्याग्रस्त, सांवेगिक, अस्थिरतायुक्त आदि प्रकार के बच्चे सम्मिलित हैं । **हेवटे तथा फारेनेस के अनुसार**, 'विशिष्ट' ऐसा व्यक्ति है जिसकी शारीरिक, मानसिक, बुद्धि, इन्द्रियाँ, मांसपेशियों की क्षमताएँ अनोखी हो अर्थात सामान्यतया एसे गुण दुर्लभ हो, ऐसी अनोखी दुर्लभ क्षमताएँ उसकी प्रकृति तथा कार्यों के स्तर में भी हो सकती है।

विशिष्ट बच्चों की पहचान एवं प्रकार :–

समाज में बहुत प्रकार के व्यक्तित्व के लोग पाये जाते है। कुछ सामाजिक होते हैं। कुछ अन्तर्मुखी हो... कुछ असामाजिक होते हैं, इसी तरह से बच्चों में विभिन्न प्रकार की वैयक्तिक भिन्नताएँ पायी जाती ... बुद्धि के होते हैं तो कुछ मन्दबुद्धि के होते हैं तो कुछ में कार्यों को सीखने की प्रवृत्ति नहीं पायी ... बच्चे सामान्य बच्चों की तरह कार्यों को करने में सक्षम नहीं होते हैं। वे विशिष्ट आवश्यकताओं वाले ... वह बच्चे सामान्य बच्चों को दी जाने वाली शिक्षा से लाभान्वित नहीं हो सकता। उसे सामान्य बच्चों ... शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती हैं जिसके कारण उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता है। अतः अध्यापक और समाज का यह नैतिक दायित्व है कि वह विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान सुनिश्चित कर उन्हें